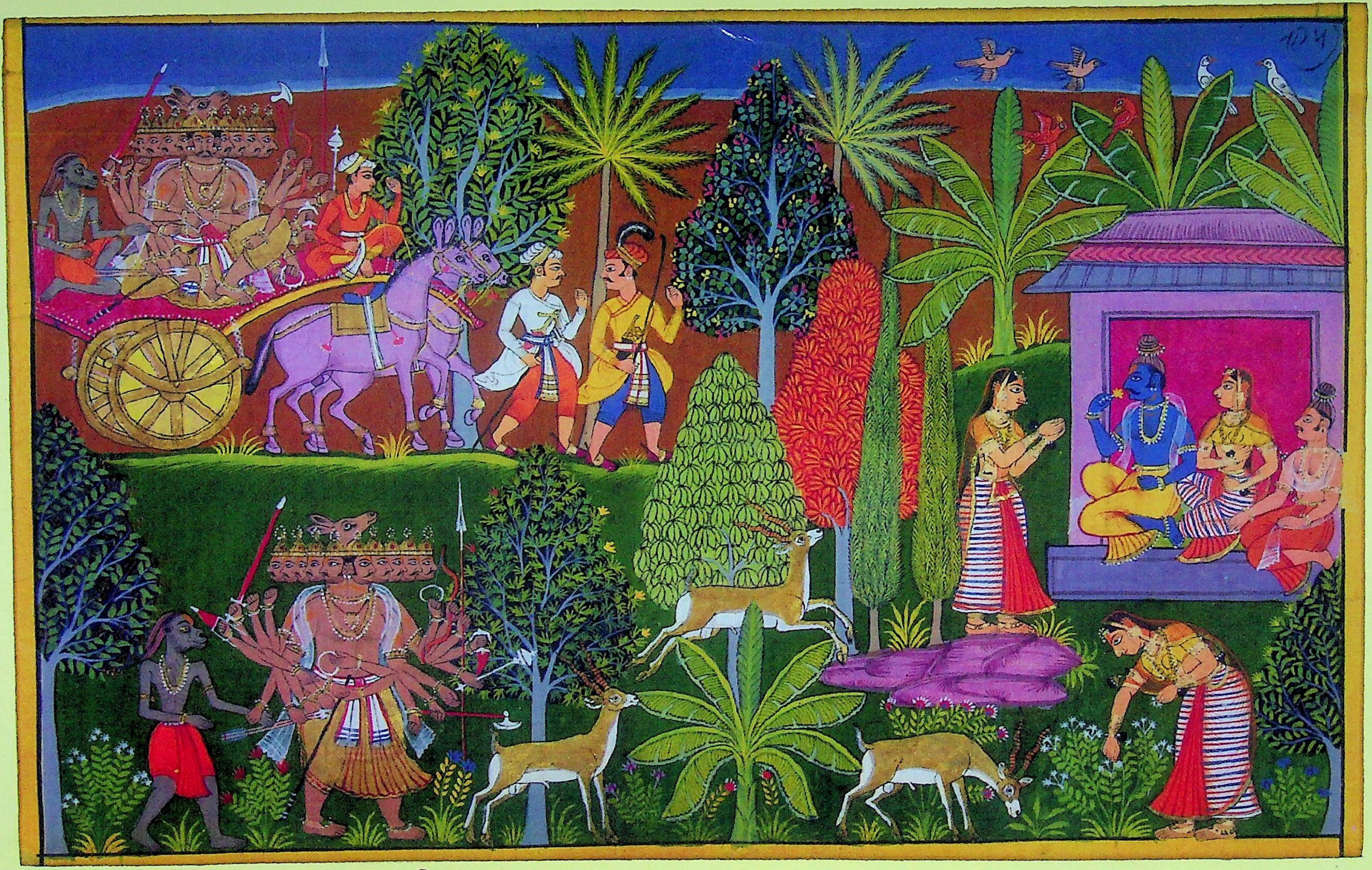
ARSH RAMAYAN (ARANYA - KANDA)

RAJASTHAN PURATAN GRANTHMALA SERIES



आर्ष-रामायण (अरण्य-काण्ड)

॥।इत्यार्षेरामायणेमारीचागमनंनामसर्गः॥

ARSH-RAMAYAN

॥।इत्यार्षेरामायणेमारीचागमनंनामसर्गः॥

(ARANYA - KANDA)

Introduction

Valmiki Ramayan ranks amongst the greatest religious classics of the world. It depicts the biography of Ram, the incarnation of lord Visnu. Aranya-Kanda of Arsh Ramayan was illustrated by the Artist Manohar during the reign of Maharana Jagat Singh (1649-1653 A.D.). 36 illustrated plates of Aranya Kanda are available in Rajasthan oriental Research Institute, Jodhpur (Raj.) Out of which 10 Plates of this manuscript are being published by the department.

ARANYA KANDA (The present MSS.) was copied and illustrated in V.S. 1708 (1651 A.D.) School of Painting-Mevar School.

Description of Plates

Plate I : Ram, Lakshman & Sita arrive in the Atri Rishi's hermitage : Sati Anusuya Welcomes Sita and gifts divine clothes and ornaments : Their subsequent departure from the hermitage.

Plate II : Lord Ram alongwith Janki & Lakshman arrive in the hermitage of Muni Sharbhanga : In the right foreground the three seek blessings from the Muni : In the centre Muni Sharbhanga Sacrificing his mortal forms to the flames.

Plate III : Ram, Lakshman & Sita in the hermitage of Rishi Agastya.

Plate IV : Left : Lakshman severing the nose of Shurpanakha : In the right Panel : Shurpanakha recounts the incident of her mutilation to her brothers Khar & Dooshan.

Plate V : Demons hurling innumerable weapons such as - Spear, Slub, axe, javelin, Sword etc. against the arrows of Ram : The deities observing from respective mounts in the sky.

Plate VI : Ram, Lakshman & Janki in their hermitage in the right : Ravan with Mareech, who later on transforms himself into the golden deer in the left foreground : Upper left - Ravan proceeding towards the hermitage of Ram.

Plate VII : A number of episodes : Goddess Sita Sees beautifully spotted golden deer and requests Ram to fetch its golden hide : In the center part Ram following the golden deer : The hunt of the deer and the demon Mareech in his original form : Meanwhile Ravan assumes the form of a saint and abduction of Sita by Ravan by deceit.

Plate VIII : Finding hermitage bereft of Sita Ram laments like a common man : The two brothers wander from place to place in search of Sita and find valture kind Jatayu, who was waiting for Rama's arrival. In the lower panel Ram extending his hands upon his head.

Plate IX : Ram and Lakshman in the hermitage of Shabari.

Plate X : In the lower Sita seated in Lanka's 'Asoka Vatika' surrounded by demon damsels (Rakshasi) : In the upper part Brahma deva with his attendants.

Director
Rajasthan Oriental Research Institute
Jodhpur

॥।इत्यार्षेरामायणेमारीचगमनंनामसर्गः॥

आर्ष–रामायण

(अरण्य–काण्ड)

॥।इत्यार्षेरामायणेमारीचगमनंनामसर्गः॥

ग्रन्थ परिचय

आदि कवि वाल्मीकि प्रणीत रामायण विश्व के धार्मिक काव्यों में सर्वोत्तम मानी जाती है। इस ग्रन्थ में भगवान् विष्णु के अवतार राम का जीवन चरित चित्रित है। महाराणा जगत सिंह (1649–1653 ई.) के काल में मनोहर नामक चित्रकार ने अरण्य काण्ड का चित्रण किया। आर्ष–रामायण के अरण्य काण्ड के 36 चित्र राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में उपलब्ध हैं, इनमें से 10 चित्र फोल्डर के रूप में विभाग द्वारा प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ अरण्यकाण्ड की प्रतिलिपि एवं चित्रांकन तिथि वि.सं. 1708 (1651 ई.) है। चित्र शैली : मेवाड़

चित्रों का संक्षिप्त विवरण

चित्र फलक I : राम, लक्ष्मण एवं सीता का अत्रि ऋषि के आश्रम में आगमन, सती अनुसूया द्वारा सीता का सत्कार एवं उनको दिव्य वस्त्राभूषण भेंट करना, तत्पश्चात् उनका प्रस्थान।

चित्र फलक II : भगवान राम का देवि जानकी एवम् भ्राता लक्ष्मण सहित मुनि शरभंग के आश्रम में आगमन : अधोफलक में दायीं ओर मुनि शरभंग तीनों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए: मध्य फलक में मुनि शरभंग अपनी पार्थिव देह अग्नि को समर्पित कर रहे हैं।

चित्र फलक III : राम, लक्ष्मण एवं सीता का ऋषि अगस्त्य के आश्रम में पदार्पण।

चित्र फलक IV : फलक में बायीं ओर लक्ष्मण शूर्पणखा की नाक विदीर्ण करते हुए : दांयी ओर शूर्पणखा खर और दूषण के समक्ष नाक और कान काटे जाने की घटना का वर्णन करती है।

चित्र फलक V : राक्षसगण योद्धा राम पर तलवार, भाले, कुल्हाड़ी आदि विविध आयुधों से प्रहार करते हुए और विमानाधिरूढ़ देवगण आकाश से दृश्यावलोकन करते हुए।

चित्र फलक VI : फलक में दांये नीचे की ओर अपनी पर्णकुटी में राम, लक्ष्मण एवं जानकी : बायीं ओर रावण के साथ मारीच, जो बाद में स्वर्णमृग का रूप धारण कर लेता है। फलक में ऊपर बायीं ओर रथासीन रावण राम की पर्णकुटी की ओर अग्रसरित हो रहा है।

चित्र फलक VII : विभिन्न घटनाओं का समावेश: सीता द्वारा स्वर्ण मृग देखकर राम से उसके चर्म की याचना करना : चित्र के मध्य भाग में स्वर्ण मृग का पीछा करते हुए राम: हरिण का वध एवं राक्षस मारीच का अपने मूल स्वरूप में लौटना : रावण द्वारा धोखे से सीता का हरण।

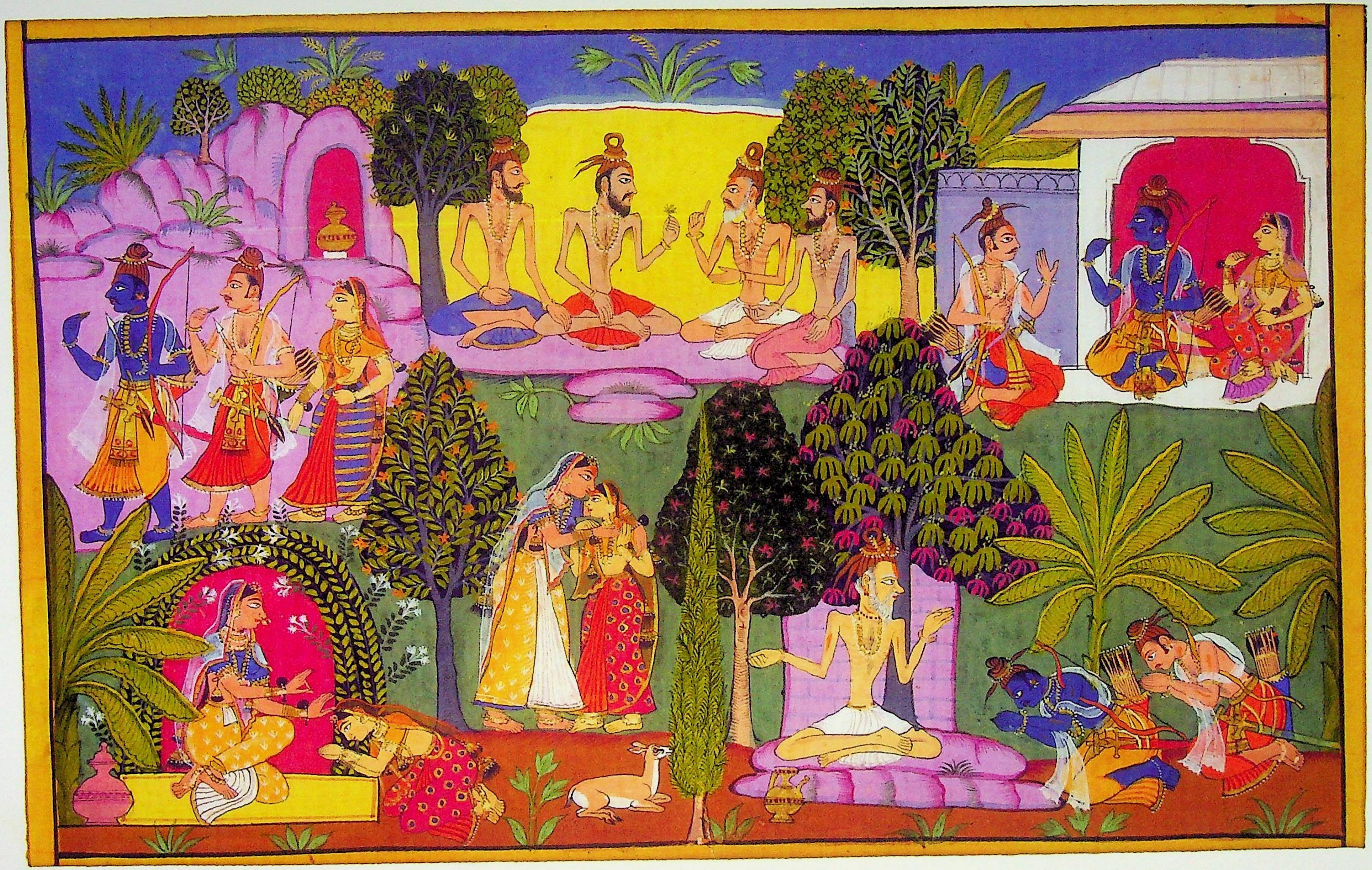
चित्र फलक VIII : राम सीता रहित आश्रम को देखकर सामान्यजन की तरह विलाप करते हैं : स्थान–स्थान पर भ्रमण करते हुए उनकी जटायु से भेंट होती है, जो राम के पद चाप की ही प्रतीक्षा कर रहा था : राम जटायु के सिर पर अपने हस्त रखने के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

चित्र फलक IX : राम एवं लक्ष्मण का शबरी के आश्रम में पदार्पण।

चित्र फलक X : फलक में नीचे सीता लंका की अशोक वाटिका में समासीन मुद्रा में चित्रित हैं, जहां उन्हें अनेक रक्ष–युवतियों ने घेर रखा है। फलक में ऊपर भगवान् ब्रह्मदेव अपने अनुयायियों सहित संदर्शित।

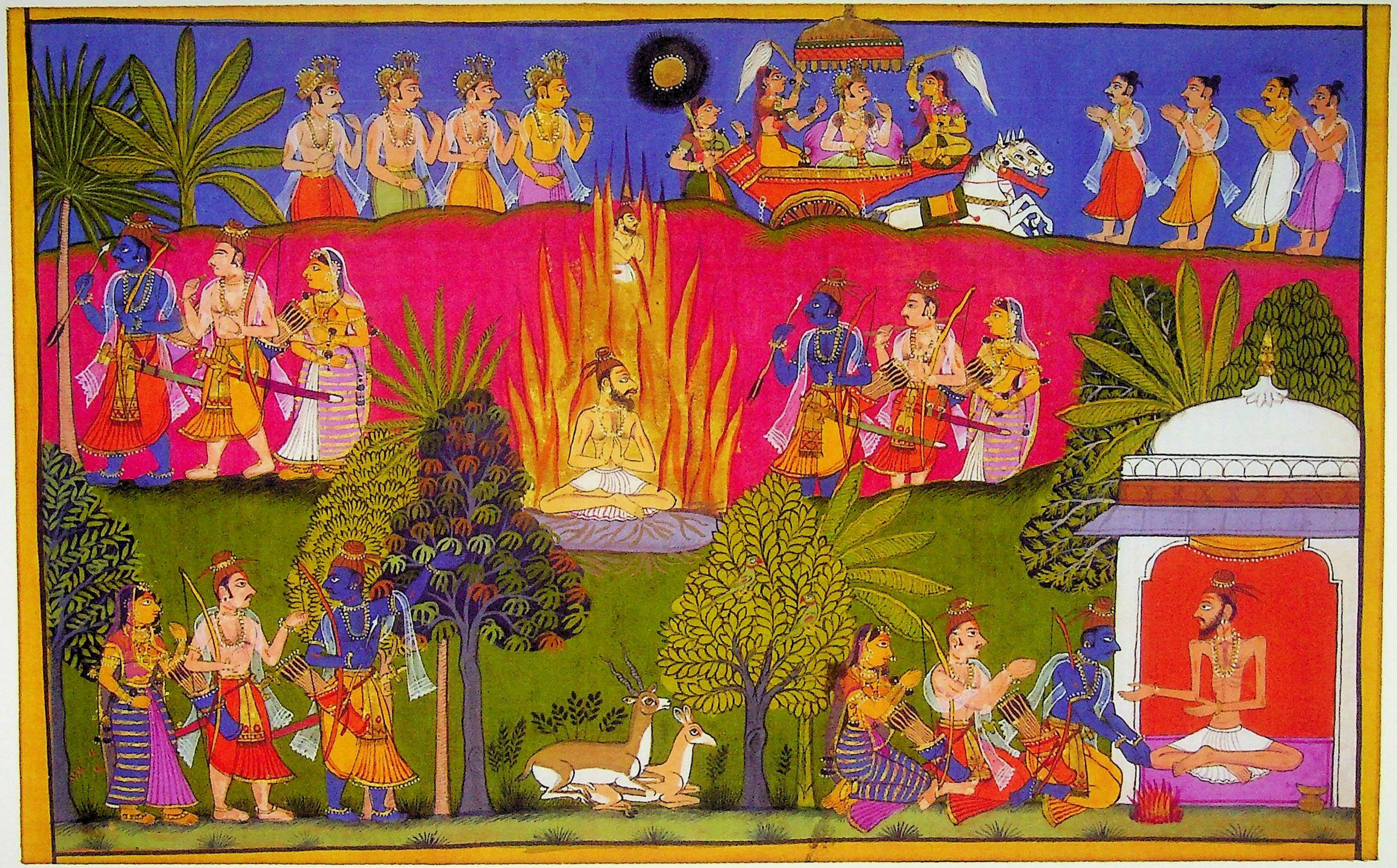
निदेशक
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

PLATE-I



Ram, Lakshman & Sita arrive in the Atri Rishi's hermitage : Sati Anusuya Welcomes Sita and gifts divine clothes and ornaments : Their subsequent departure from the hermitage : Mewar, Ca AD 1649-50
राम, लक्ष्मण एवं सीता का अत्रि ऋषि के आश्रम में आगमन, सती अनुसूया द्वारा सीता का सत्कार एवं उनको दिव्य वस्त्राभूषण भेंट करना, तत्पश्चात् उनका प्रस्थान : मेवाड़ ई. सन् 1649-50

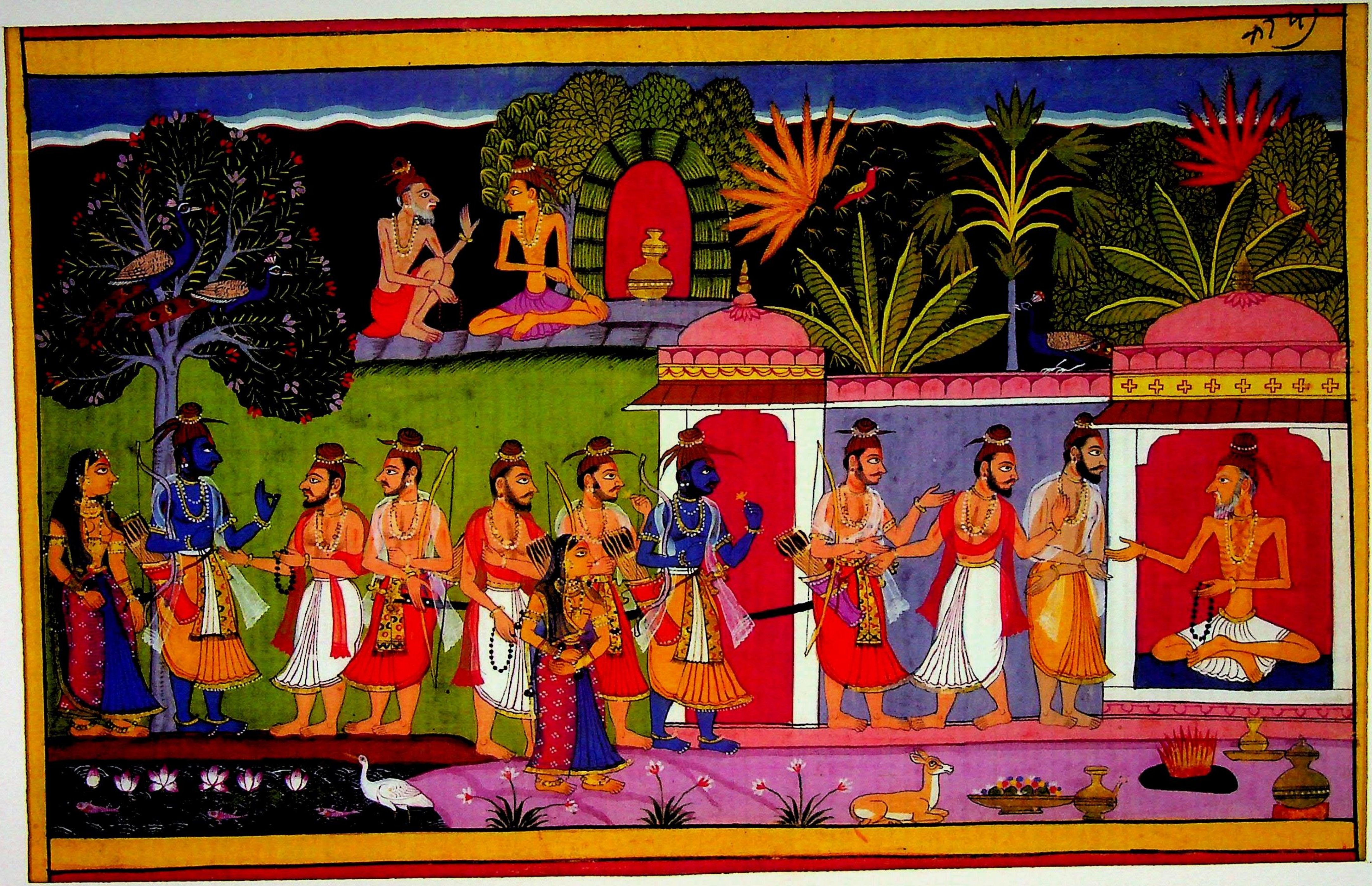
PLATE-II



Lord Ram alongwith Janki & Lakshman arrive in the hermitage of Muni Sharbhanga : In the right foreground the three seek blessings from the Muni : In the centre Muni Sharbhanga Sacrificing his mortal forms to the flames : Mewar, Ca AD 1649-50

भगवान राम का देवि जानकी एवम् भ्राता लक्ष्मण सहित मुनि शरभंग के आश्रम में आगमन : अधोफलक में दायीं ओर मुनि शरभंग तीनों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए: मध्य फलक में मुनि शरभंग अपनी पार्थिव देह अग्नि को समर्पित कर रहे हैं : मेवाड़ ई. सन् 1649-50

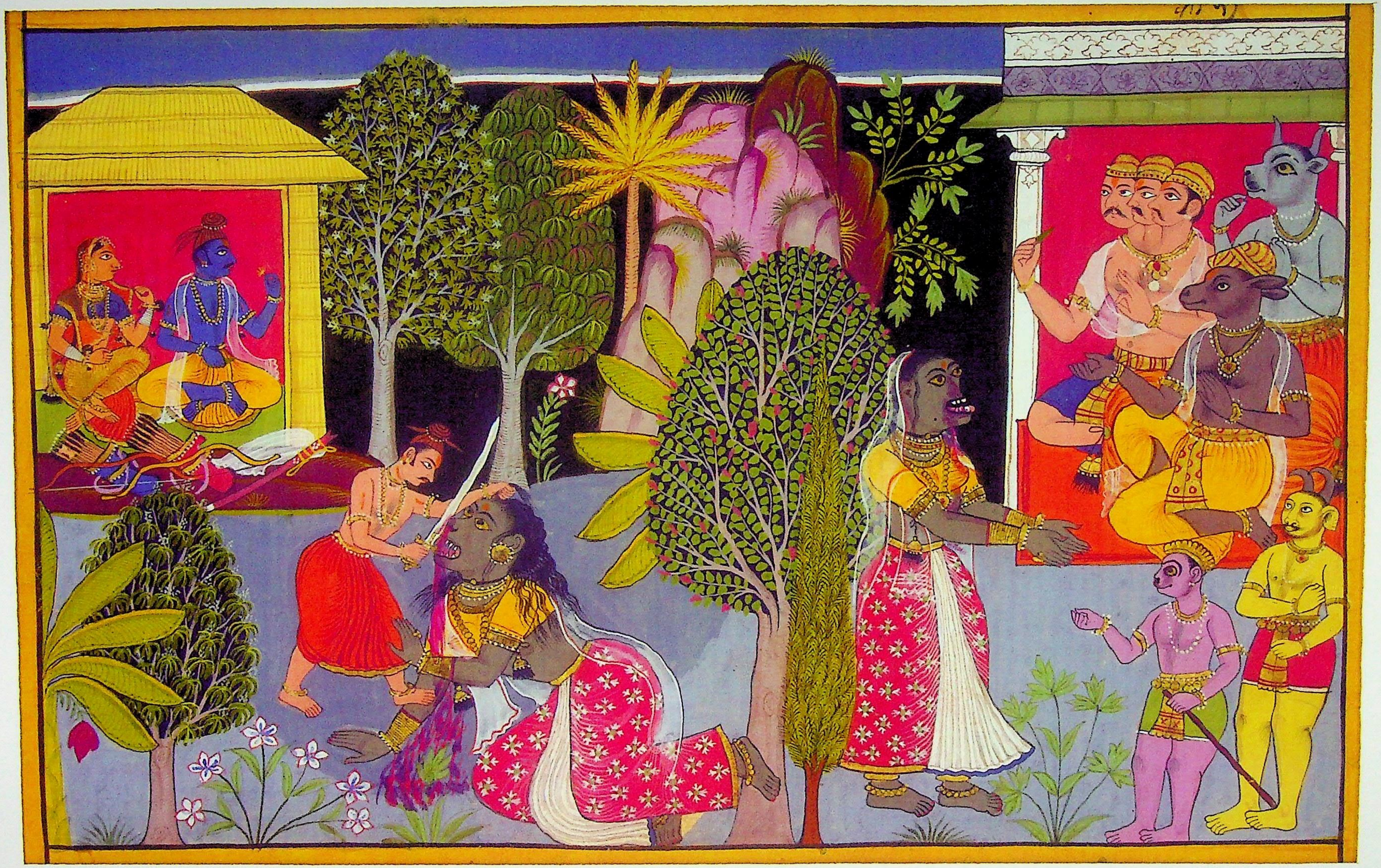
PLATE-III



Ram, Lakshman & Sita in the hermitage of Rishi Agastya : Mewar, Ca AD 1649-50

राम, लक्ष्मण एवं सीता का ऋषि अगस्त्य के आश्रम में पदार्पण : मेवाड़ ई. सन् 1649-50

PLATE-IV



Left : Lakshman severing the nose of Shurpanakha : In the right Panel : Shurpanakha recounts the incident of her mutilation to her brothers Khar & Dooshan : Mewar, Ca AD 1649-50

फलक में बायीं ओर लक्ष्मण शूर्पणखा की नाक विदीर्ण करते हुए : दांयी ओर शूर्पणखा खर और दूषण के समक्ष नाक और कान काटे जाने की घटना का वर्णन करती है : मेवाड़ ई. सन् 1649-50

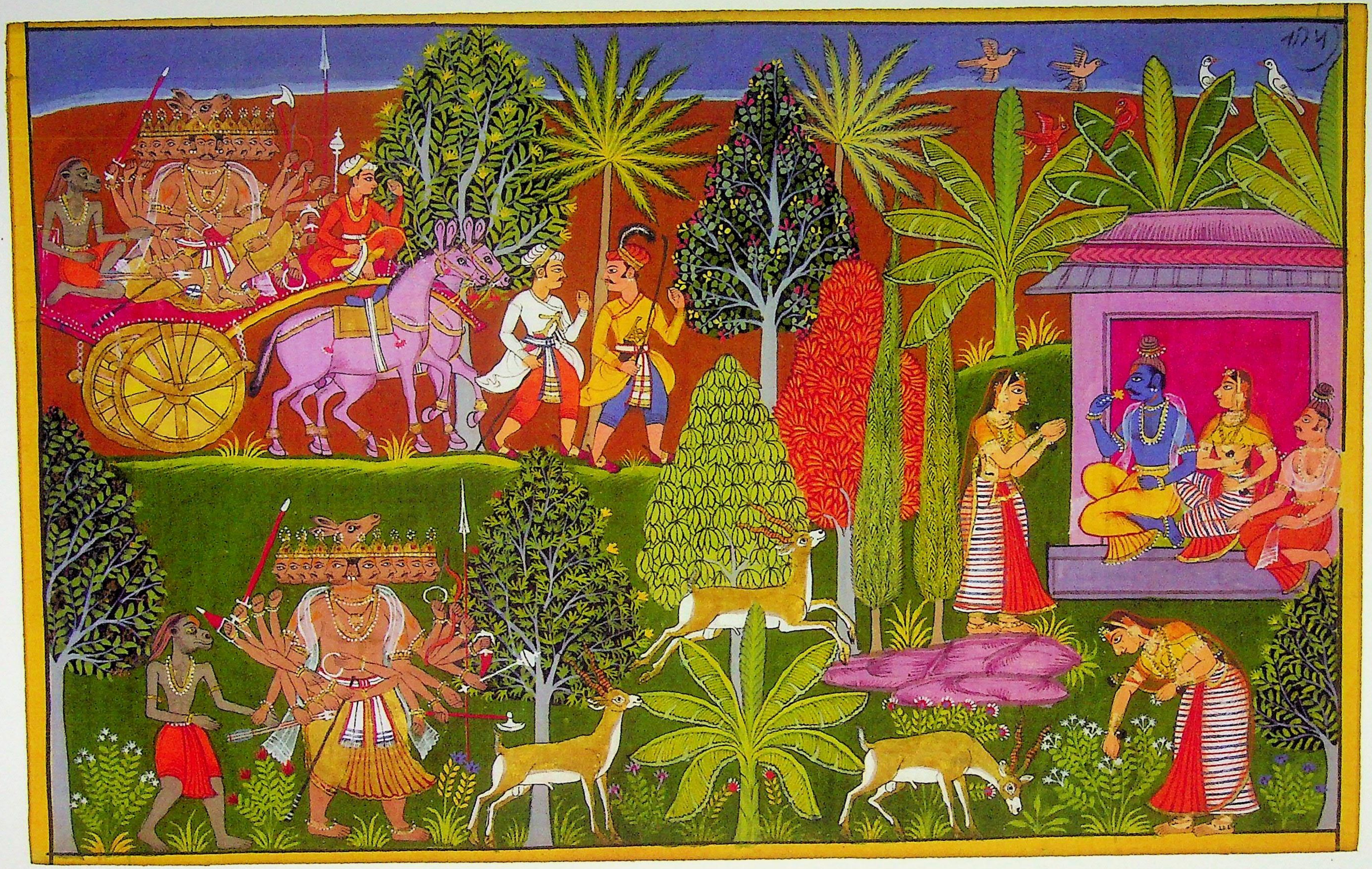
PLATE-V



Demons hurling innumerable weapons such as - Spear, Slub, axe, javelin, Sword etc. against the arrows of Ram : The deities observing from respective mounts in the sky : Mewar, Ca AD 1649-50

राक्षसगण योद्धा राम पर तलवार, भाले, कुल्हाड़ी आदि विविध आयुधों से प्रहार करते हुए और विमानाधिरूढ़ देवगण आकाश से दृश्यावलोकन करते हुए : मेवाड़ ई. सन् 1649-50

PLATE-VI



Ram, Lakshman & Janki in their hermitage in the right : Ravan with Mareech, who later on transforms himself into the golden deer in the left foreground : Upper left - Ravan proceeding towards the hermitage of Ram : Mewar, Ca AD 1649-50

फलक में दांये नीचे की ओर अपनी पर्णकुटी में राम, लक्ष्मण एवं जानकी : बायीं ओर रावण के साथ मारीच, जो बाद में स्वर्णमृग का रूप धारण कर लेता है। फलक में ऊपर बायीं ओर रथासीन रावण राम की पर्णकुटी की ओर अग्रसरित हो रहा है : मेवाड़ ई. सन 1649-50

PLATE-VII



A number of episodes : Goddess Sita Sees beautifully spotted golden deer and requests Ram to fetch its golden hide : In the center part Ram following the golden deer : The hunt of the deer and the demon Mareech in his original form : Meanwhile Ravan assumes the form of a saint and abduction of Sita by Ravan by deceit : Mewar, Ca AD 1649-50

विभिन्न घटनाओं का समावेशः सीता द्वारा स्वर्ण मृग देखकर राम से उसके चर्म की याचना करना : चित्र के मध्य भाग में स्वर्ण मृग का पीछा करते हुए रामः हरिण का वध एवं राक्षस मारीच का अपने मूल स्वरूप में लौटना : रावण द्वारा धोखे से सीता का हरण : मेवाड़ ई. सन् 1649–50

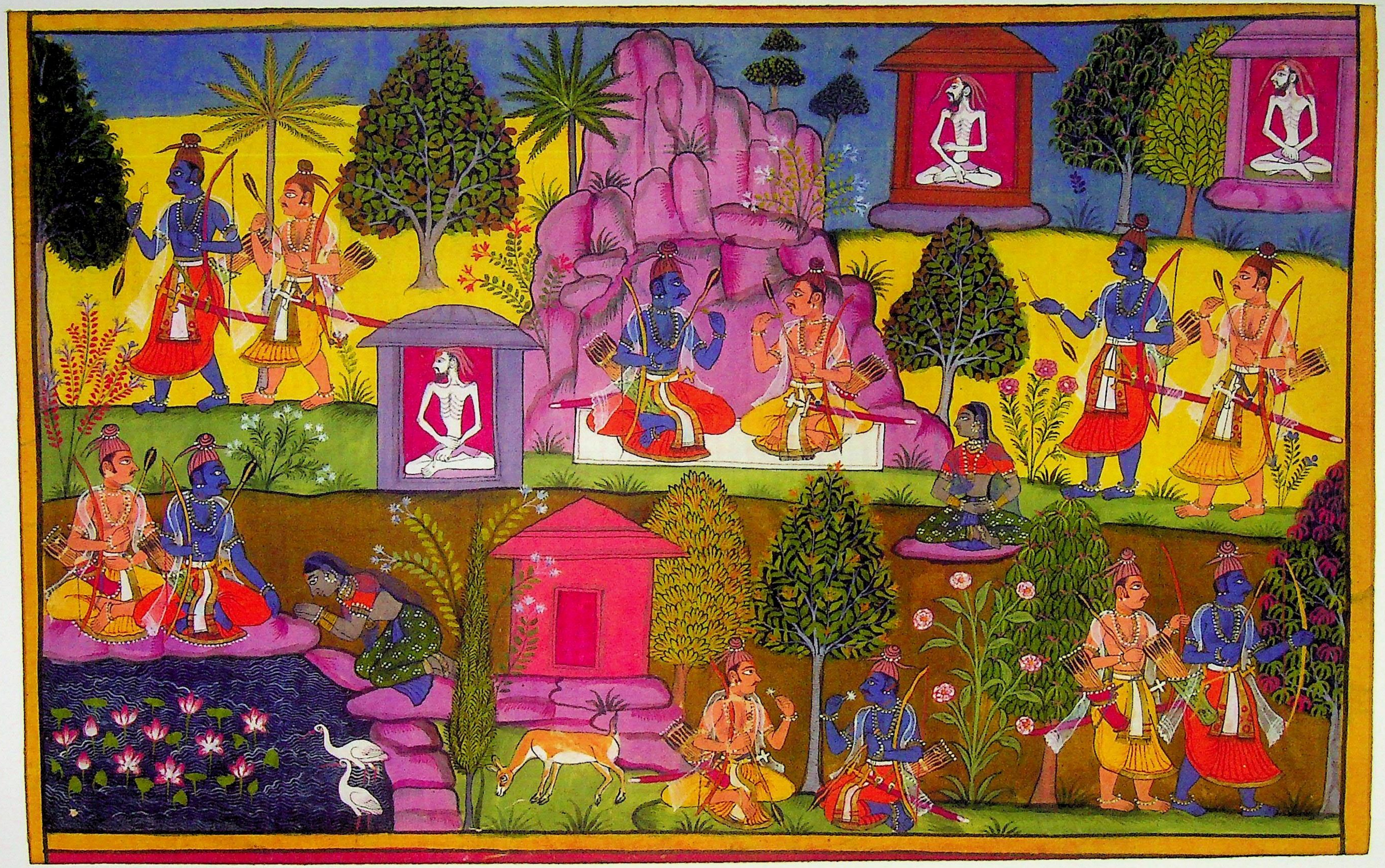
PLATE-VIII



Finding hermitage bereft of Sita Ram laments like a common man : The two brothers wander from place to place in search of Sita and find valture kind Jatayu, who was waiting for Rama's arrival. In the lower panel Ram extending his hands upon his head : Mewar, Ca AD 1649-50

राम सीता रहित आश्रम को देखकर सामान्यजन की तरह विलाप करते हैं : स्थान-स्थान पर भ्रमण करते हुए उनकी जटायु से भेंट होती है, जो राम के पद चाप की ही प्रतीक्षा कर रहा था : राम जटायु के सिर पर अपने हस्त रखने के लिए आगे बढ़ रहे हैं : मेवाड़ ई. सन् 1649-50

PLATE-IX



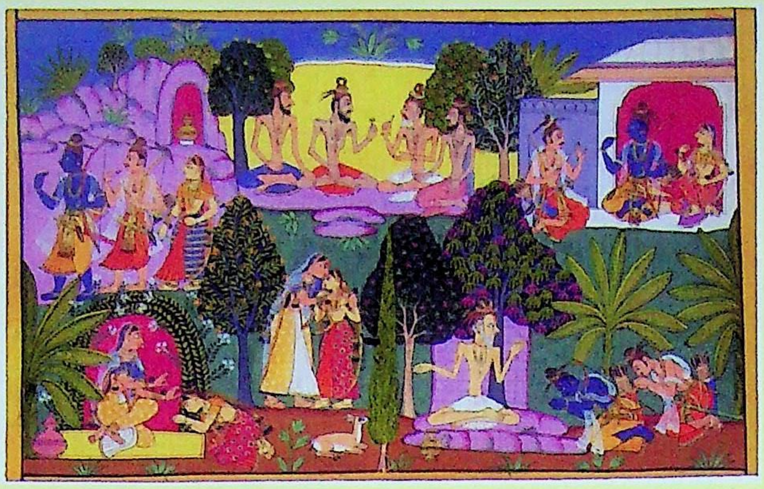
Ram and Lakshman in the hermitage of Shabari : Mewar, Ca AD 1649-50
राम एवं लक्ष्मण का शबरी के आश्रम में पदार्पण : मेवाड़ ई. सन् 1649-50

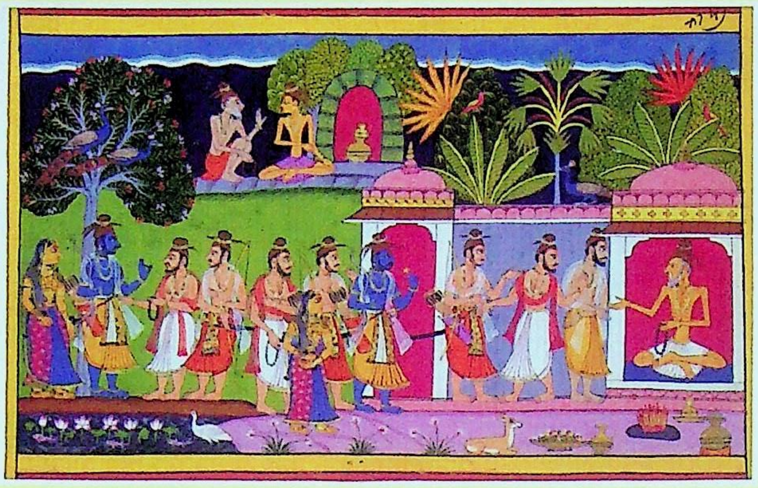
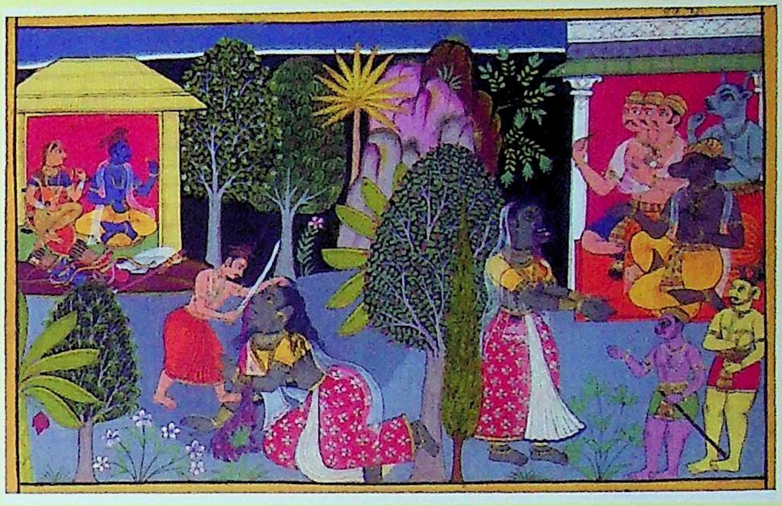
PLATE-X



In the lower Sita seated in Lanka's 'Asoka Vatika' surrounded by demon damsels (Rakshasi) : In the upper part Brahma deva with his attendants : Mewar, Ca AD 1649-50

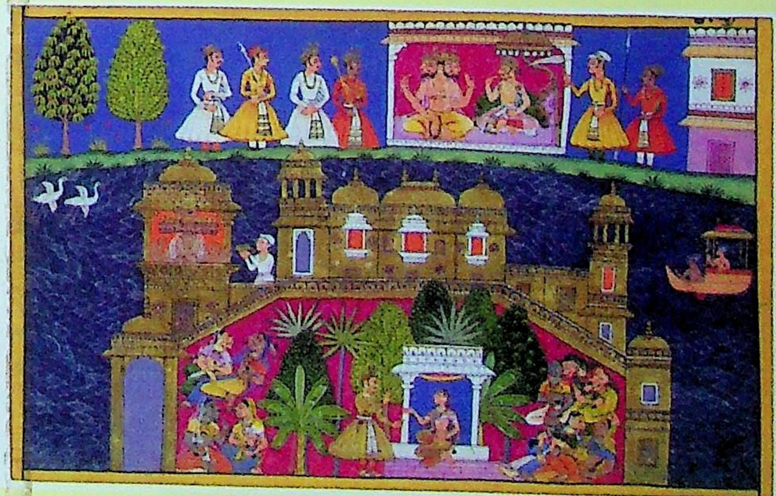
फलक में नीचे सीता लंका की अशोक वाटिका में समासीन मुद्रा में चित्रित हैं, जहां उन्हें अनेक रक्ष-युवतियों ने घेर रखा है। फलक में ऊपर भगवान् ब्रह्मदेव अपने अनुयायियों सहित संदर्शित : मेवाड़ ई. सन् 1649-50









Rajasthan Oriental Research Institute

P.W.D. Road, Jodhpur (Raj.)